

एक बौड़िया माणूछ



Bangani

एक बौड़िया माणूछ

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बड़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद॥



एक गाउँ दि बिटू नौऊँ रौ आदमी रौयै
थौ। सेउ आपडै पौरिबार रै साथै खुशी
कौइ रौयै थौ। तेसरी कोइ बी नौकरी ना
नौथि थी।



पर लोग तेसरी इज़त कौरैण थै, केलाइ
सेउ एक सादारण माणूछ थौ। औज़ि
सारै लोग तेसरै पौरिबार औज़ि तेसरै
बौड़िया कामुं ज़ाणैण थै।



सेउ हर रोज़ रातिकै पार्क दि गुमदै डै
थौ, पार्क दि बौरी गन्दगी औज़ि कुड़ौ
कबाड़ थौ फैलाओन्दौ, तेत्कै पेटारै
खेलैण थै। पर साफ सौफाइ बिलकुल
बी ना कौरैण थै।



बीटूइ सुँचौ, कि “ऐ ज़िम्बारी कासरी?”
कुछ लोग तै खाली शिकाइत कौरैण
साफ सौफाइ ना कौरदै। लोगु आपड़ी
आदत औज़ि ज़िम्बारी बी बिस्री गोइ।



तैबै बीटूइ आफुइ सौफाइ कौरनौ शुरु
कियौ। सेउ तेत्कै कौइ रातिकै रोज़
पार्केइ साफ कौरै थौ। लोग तेस देखियौ
एशौ बोलैण थै कि एउ माणूछ आपड़ौ
बौक्तेइ केलाइ रौ खौराब कौरदै लागी?



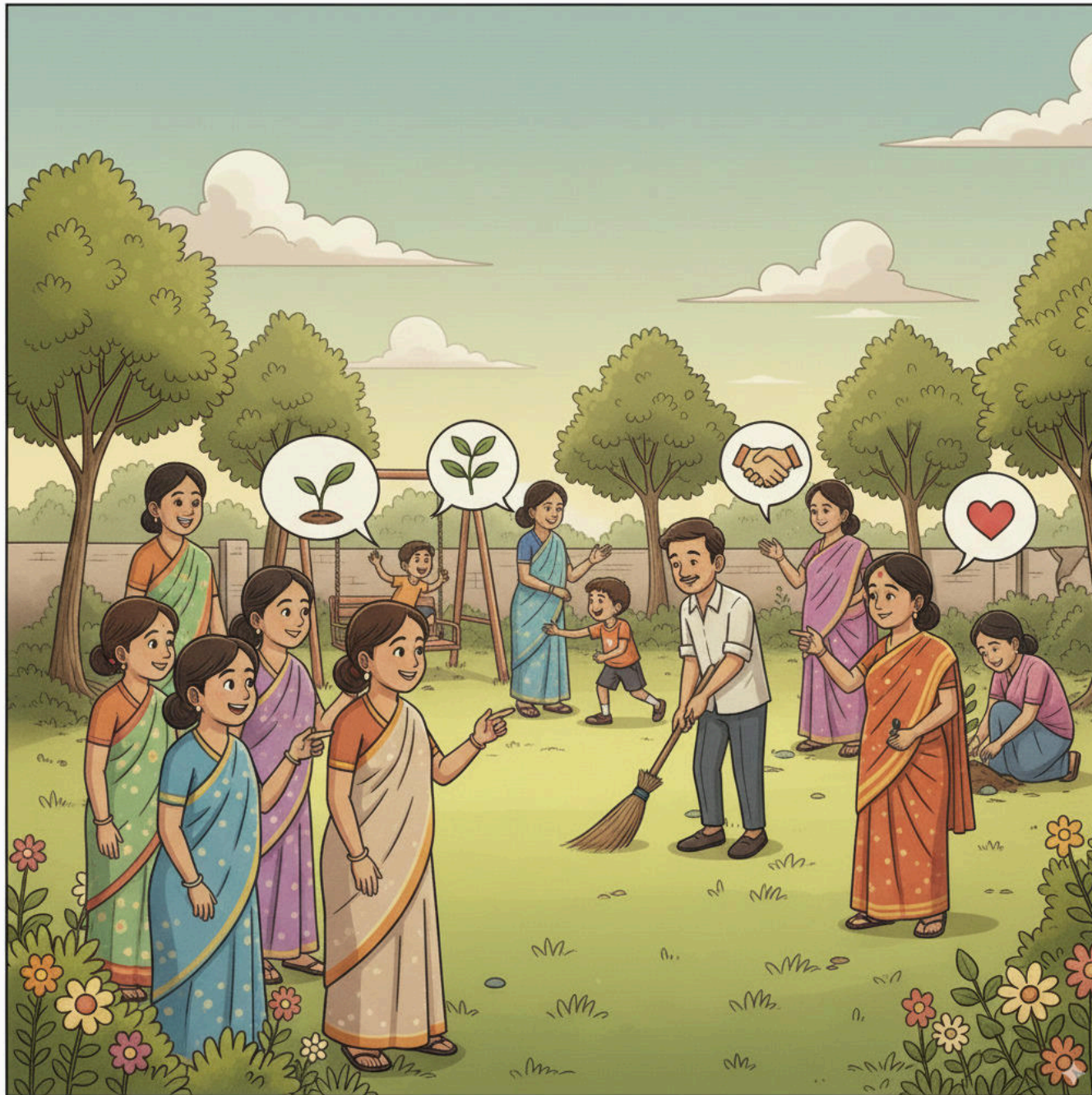
बीटूइ लोगु री बुशै अनशुणी की। औज़ि
कुछ बौक्तै बासियै पेटारै बी तेसरी मदद
कौरदै आन्दै लागै। औज़ि तेत्कै रै लोगु
तेत्कै बौदलाव मैसूस



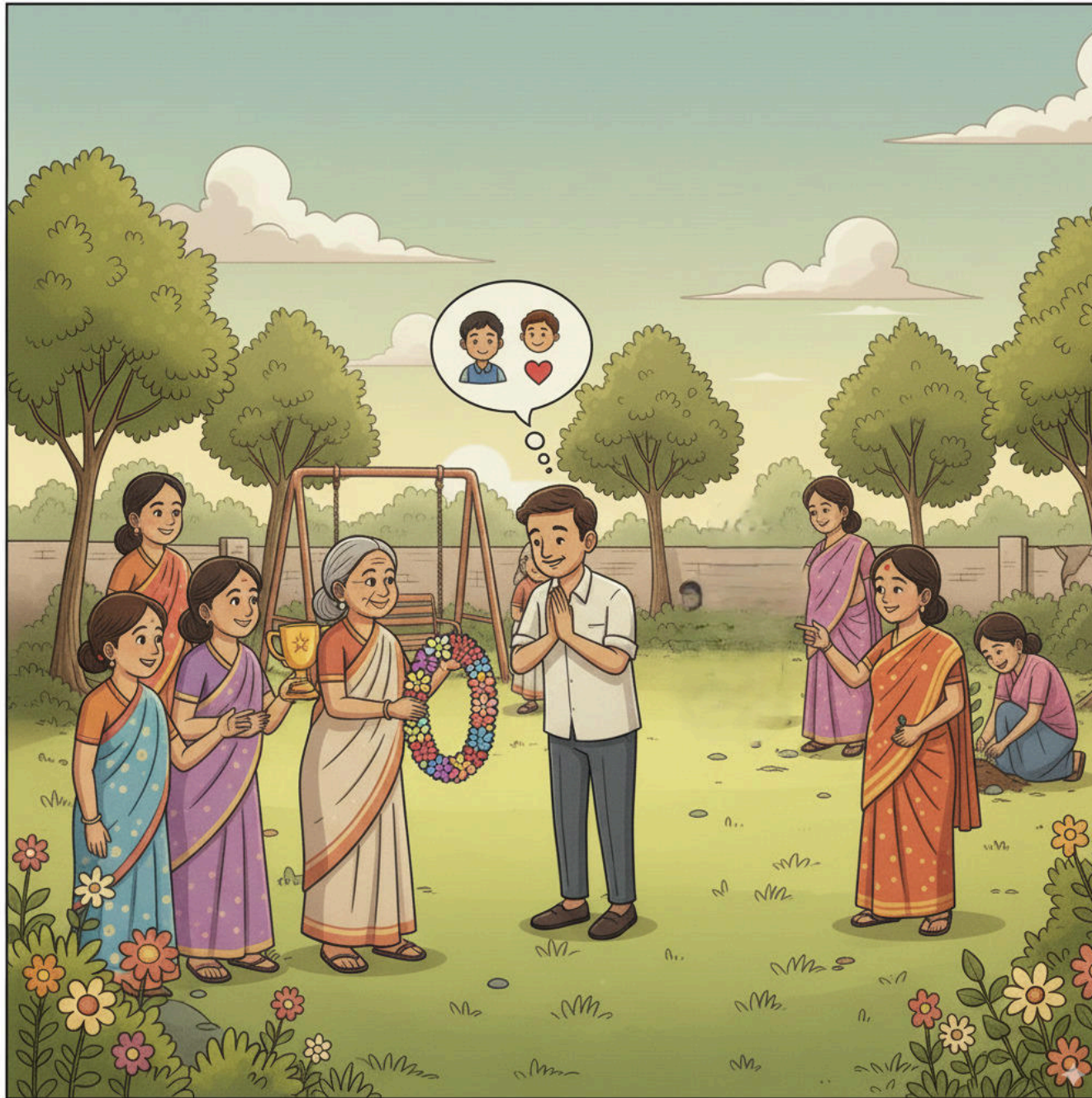
एक बुजुर्ग छेउड़िएइ तेसरी इज़त की
औज़ि बोलौ कि बेटा एउ बौदलाव
तुमारी बौज़े कौइ उवौ। बीटू एशौ
शुणियो खुश उवौ।



ऐबै तेस पार्क दि फूल खिल्दै लागै
औज़ि सेउ पार्क बिलकुल साफ सुथरौ
उड़ गोऔ थौ। औज़ि पेटारै बी खुशी
कौड़ खेलैण थै। औज़ि लोगु बी सौफाइ
कौरणी शुरु की।



लोग ऐबै एशौ सौमज़ी गोए थै कि छोटौ
काम कौरणै कौइ बी बौदलाव औई
सौकै। ज़िम्बारी माणछु महान चाणै,
औज़ि मदद कौरणै कौइ पौरिबार औज़ि
गाउँ रै लोग खुश औयैण।



बीटूइ एशौ ना सुँचौ थौ कि लोग तेसरी
तारिफ कौरैण। तिणी तै खाली सेउ काम
एज़ि बौजै कौइ कियौ कि सेउ तेस गाउँ
दि रौयै। पर लोगु तेसरौ आदर कियौ
औज़ि एक बौड़ौ पुरुस्कार बी देणौ।



एक बियाळकै तेसरौ पुरौ पौरिबार पार्क
दि थौ बोशौन्दौ । औजै पेटारै बौड़िया
कौइ खेल्ले औजि औस्दे रौयै थै लागी ।
बीटू बी बौरी खुश थौ ।



बीटूइ आपडै बेटा कै बी बौड़िया शिक्षा
देणी औज़ि बोलौ कि बौड़िया माणूछ
सेउइ औयै। बौदलाव कौरणौ आफुइ
शुरू कौरै।”सौमान, सौफाइ, औज़ि
मदद कौरणौ एज़ि आमारी ज़िम्बारी
औयै।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....,धन्यवाद,.....

